वो मनहूस दिन!

गीता हरिहरन

लाला मनीराम जाग तो गए थे पर अभी उन्होंने अपनी आँखें नहीं खोली थीं। वे चादर ओढ़े हरी झण्डी का इन्तज़ार कर रहे थे। रोज़ सुबह जब तक बालू उन्हें आँखें खोलने को न कहता, लाला उठते नहीं थे। बालू उनका नौकर भी है, सहायक भी है और खजाँची भी वही है। कह सकते हैं कि बालू उनका दायाँ हाथ है। बालू लाला को उठाने से पहले ही कमरे से हर मनहूस चीज़ को बाहर कर देता। ताकि लाला जब उठें तो उन्हें सब कुछ अच्छा ही अच्छा दिखे।

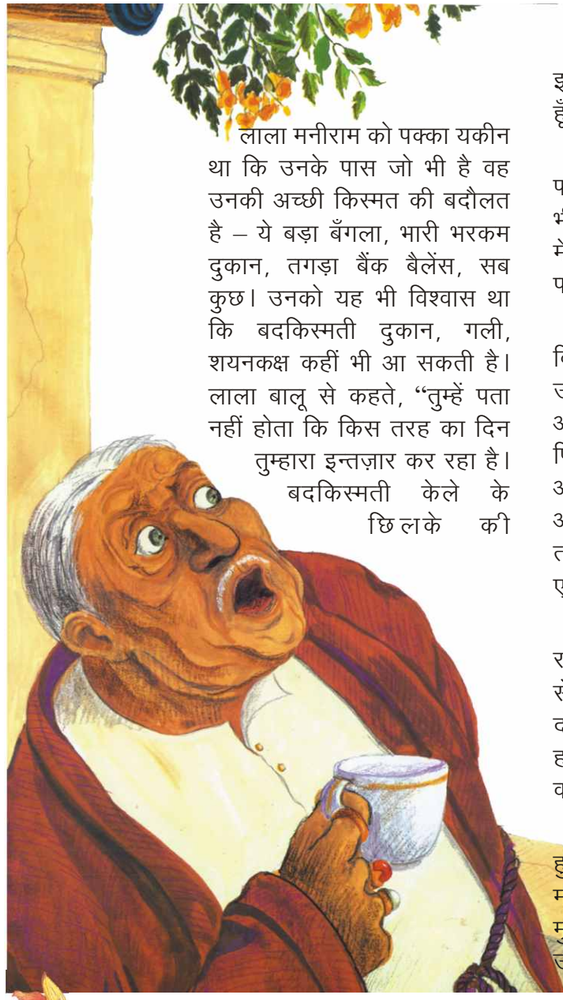

लाला मनीराम को पक्का यकीन था कि उनके पास जो भी है वह उनकी अच्छी किस्मत की बदौलत है – ये बड़ा बँगला, भारी भरकम दुकान, तगड़ा बैंक बैलेंस, सब कुछ। उनको यह भी विश्वास था कि बदकिस्मती दुकान, गली, शयनकक्ष कहीं भी आ सकती है। लाला बालू से कहते, "तुम्हें पता नहीं होता कि किस तरह का दिन तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा है। बदकिस्मती केले के छिलके की तरह आसपास कहीं भी हो सकती है, तुम्हारे गिरने के इन्तज़ार में पलकें बिछाए। इसीलिए तो मैं इतना ध्यान रखता हूँ।"

आज सुबह भी बालू ने रोज़ की तरह चारों ओर देखा – फर्नीचर के नीचे, कोनों आदि में। उसने बाहर जाके आसमान भी देखा – कहीं आज ग्रहण (अपशकुन!) का दिन न हो। गली में कोई कुत्ता भौंक न रहा हो (बड़ा अपशकुन!)। कहीं झाड़ू न पड़ी हो या सुअर बगीचे में न हो (और बड़ा अपशकुन!)।

जब कहीं कोई अपशकुन न दिखा तो बालू लकड़ी की विशाल सीढ़ियाँ चढ़ते हुए लाला मनीराम को जगाने गया। उसने दरवाज़े पर दस्तक दी। आहिस्ता-से दरवाज़ा खोला। और चाय की तश्तरी टेबिल पर रखी। खिड़की के परदे खींचे। फिर उसने बाहर झाँककर देखा कि खिड़की पर कोई अपशकुनी कौआ तो नहीं बैठा है। सब ठीक था। सब तरफ से आश्वस्त होकर वह चादर के अन्दर जगे पड़े अपने मालिक की तरफ मुड़ा। "मालिक सब ठीक है। आप अपनी आँखें खोलकर एक शुभ दिन की शुरुआत कर सकते हैं।"

चादर को बगल में फेंककर लाला मनीराम उठे। टेबिल पर रखी अपनी सुनहरी घड़ी को देखकर बोले, "आज तुम आठ सेकेण्ड देरी से आए हो।" बालू बहुत ही विनम्रता से और एक दोषी की तरह सिर झुकाकर खड़ा रहा। (मालिक के सामने वह हमेशा दोषी और गलत साबित होता है। इसलिए बेहतर है हर वक्त वैसे ही भाव चेहरे पर बनाए रखे।)

लाला मनीराम ने उबासी ली, अँगड़ाई ली और कुछ सोचते हुए काँख खुजालने लगा। आज शुभ दिन होना ही चाहिए – महीने का आखिरी दिन जो है। इस दिन लाला बही-खाते (या मुनाफा) देखता था। वैसे तो उसे पता होता था कि इस महीने उसने कितना कमाया है। फिर भी वह इस दिन अपने दफ्तर में

सभी चित्र: तापोशी घोषाल

बही-खातों में दर्ज हर चीज़ पर गौर करता। और यह जान-जानकर खुश होता कि उसने जहाँ तक हो सके चालाकी से और चूना लगाकर कितना कमाया है। "आज हिसाब का दिन है बालू!" लाला की आवाज़ में अजब रोमांच और उत्साह था। बालू अचानक अति नम्र हो चला था।

लाला ने उसकी तरफ खींसे निपोरी। (यह उसके मुस्कुराने का तरीका था)। रुपया कमाने और उसे गिनने में लाला को अलग ही मज़ा आता था। वह बिस्तर से उछला (हालाँकि 105 किलो वज़नी लाला के लिए यह आसान नहीं था)। चाय का प्याला लेकर वह खिड़की के पास चला गया। और करीने से सजे अपने बगीचे को निहारने लगा।

गर्मी जाने को थी। ठण्डी हवा बह रही थी। लगता था बारिश होगी। लाला के मोटे-ताज़े हाथ के रोएँ इस रोमांच से खड़े हो रहे थे। अचानक हवा तेज़ हो गई। और पेड़ों से पत्तियों की बारिश होने लगी।

इतने में लाला को झर्र-झर्र, खर्र-खर्र की आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ में एक लय थी। आवाज़ अब ठीक खिड़की के सामने थी। वहाँ एक फटेहाल बच्चा झाड़ू लगा रहा था। बच्चे ने मुस्कुराकर लाला मनीराम को देखा। और झाड़कर पत्तियों का ढेर लगाने लगा।

लाला मनीराम सन्न रह गया।

यह फटीचर ज़रूर झाड़ू-वाला होगा! एक तो झाड़ू-वाला ऊपर से झाड़ू। सुबह-सुबह दो-दो अपशकुनी चीज़ें देख लीं। लाला के मोटे-मोटे होंठों से डर और गुस्से से भरी चीख निकल पड़ी। वो आवाज़ें कमरे में घूमती हुई नीचे बगीचे में पहुँचीं – खून के प्यासे दो खूँखार कुत्तों की तरह। "दफा हो जाओ!!" लाला खिड़की से चीखा। "उसे मेरे बगीचे से दफा करो।" लाला काँपते हुए बालू पर बरसा। अब क्या अशुभ घट गया यह देखने के लिए बालू खिड़की से लगभग लटककर देख रहा था।

लाला ने बालू की फटी कॉलर पकड़के उसे यूँ खींचा कि वो फर्श से कुछ इंच ऊपर उठ गया। "देख बाहर। दिखा कुछ?"

वो तो बालू पहले ही देख चुका था। पर उसने फिर एक नज़र डाली। बोला, "वीरबल है मालिक! मालिक आज हवा चली थी इसलिए पत्ते झाड़ रहा था।" वह लड़खड़ा रहा था। पसीने से तरबतर था। आज नम्र बने रहने से कुछ न होगा।

"वीरबल?" लाला चिल्लाया। जैसे, गुस्सा इस बात पर हो कि उस छोटे-से फटेहाल बच्चे का भी कोई नाम है। लाला ने बालू को ज़ोर से फर्श पर पटका। वह धम्म से गिरा। "नहीं मालूम था तुझे कि वो झाड़ू-वाला है, और उसके हाथ में झाड़ू नहीं दिखी तुझे!"

"पर मालिक, उनके पास तो रहती ही है... (बालू धीमे-से वह डरावना शब्द फुसफुसाया।) झाड़ू।"

"जाओ और झाड़ू समेत उसे बाहर फेंक दो। अपशकुन टालने के लिए अब मुझे फिर से बिस्तर में जाकर पूजा करनी पड़ेगी। जब तक मैं नीचे आऊँ, वह बाहर हो जाना चाहिए। और खबरदार उसे एक धेला भी दिया तो। उसने आज हिसाब के दिन अपशकुन किया है।"

(इस कहानी का शेष भाग तुम अगले अंक में पढ़ोगे...)